शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

मार्कण्डेय के उपन्यास 'अग्निबीज' में ग्रामीण चेतना

मिलिंद कुमार गौतम
तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति अध्ययनशाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

भारत का मूल चरित्र ग्रामीण है। यह गावों का देश है। भारतीय संस्कृति और सभ्यता ने अपने विकास के उपकरण इसी चरित्र के आसपास चुने हैं। यहाँ का ग्रामीण जन-जीवन हमेशा से प्रकृति से समन्वय का हिमायती रहा है। इसलिए यहाँ के साहित्य में ग्राम्य जीवन सहसा मुखरित होता रहा है। मार्कंडेय ने अपने लेखन का ताना-बाना भी ग्राम्य संस्कृति के इर्द-गिर्द बुना है। प्रस्तुत शोध पत्र में मार्कंडेय के उपन्यास 'अग्निबीज' में ग्रामीण चेतना का विश्लेषण किया गया है।

प्रस्तावना

साहित्य समाज का प्रसूत है। साहित्य की सोद्देश्यता उसके समाज सापेक्ष होने में है। साहित्य का मुख समाज सापेक्ष होता है। हिन्दी साहित्य के वृहत परिप्रेक्ष्य में विभिन्न भाषाओं में विभिन्न प्रकार के लिखे गए उपन्यास साहित्य का जायजा लिया जाए तो यह विस्मयकारी तथ्य सामने आता है कि आंचलिक उपन्यास के सूत्र प्रेमचंद से प्रारंभ होते हैं। प्रेमचंद ने अपने साहित्य को समाज से जोड़ते हुए यथार्थवादी परंपरा का सूत्रपात किया।''1 प्रेमचंद के बाद आंचलिक उपन्यास परंपरा को आगे बढ़ाने के लिए अनेकानेक यशस्वी कथाकारों ने ग्रामीण और आंचलिक जीवन को केंद्र में रखकर उपन्यास साहित्य का सृजन किया, जिसमें फणीश्वरनाथ रेणु, नागार्जुन, शिवप्रसादसिंह, उदयशंकर भट्ट, विवेकी राय, राजेंद्र अवस्थी, रामदरश मिश्र, कृष्णा सोबती, मन्नू भण्डारी, उषा प्रियम्वदा आदि के नाम के साथ मार्कण्डेय का नाम भी उल्लेखनीय है। हिंदी साहित्य में आंचलिक उपन्यासकारों के एक पूरी परम्परा विद्यमान है।

मार्कंडेय का रचना कर्म

स्वतंत्रता के बाद के लेखकों में मार्कण्डेय का महत्वपूर्ण स्थान है। मार्कण्डेय गद्य साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर एवं बहुप्रतिभा के धनी हैं। मार्कण्डेय का जन्म 2 मई 1930 को उत्तरप्रदेश के जौनपुर जिले में बराई नामक ग्राम में किसान परिवार में हआ। चूंकि उनका जन्म एक किसान परिवार में हुआ था, इसलिए ग्रामीण परिवेश इनके कथा साहित्य में दृष्टिगता होता है। अंचल की लोक संस्कृति भाषा स्थानीय जीवन को सूक्ष्म रूप से अपने कथा साहित्य में चित्रित किया है। मार्कण्डेय की जन समाज से गहरी संपृक्ति रही है। वे सामाजिक दायित्वों से सर्वथा मुक्त नहीं हैं।

प्रगतिशील दृष्टि होने के कारण सामाजिक पक्षधरता उनके कथा साहित्य की विशेषता है। यह कथा साहित्य परिवेश विशिष्ट अंचल की स्थानगत एवं कलागत विशेषताओं को समेटता

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 फरवरी 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

है। और आंचलिकता में यह सबसे महत्वपूर्ण तत्व माना जाता है।

प्रत्येक साहित्यकार अपनी निजी तथा सामाजिक जीवनानुभूतियों से प्रेरित होकर साहित्य कर्म निभाता है। जीवन की सच्ची अनुभूतियों से लेखक की यथार्थ संवेदनाओं का परिचय प्राप्त होता है। इनके कथा साहित्य में आज के जीवन की बड़े ही तीखे यथार्थ चेतना की अभिव्यक्ति है। मार्कण्डेय ने अपने कथा साहित्य में गांव, शहर के पिछड़े अंचल के जीवन सत्यों को टूटते-बनते जीवन मूल्यों को रूपायित किया है। वे जीवन की गहराई को भले-बुरे पक्षों को, यथार्थ अभिरुचि और मानवतावादी दृष्टि से चित्रित करने वाले सक्षम रचनाकार हैं। एक ओर माक्र्सवादी विचारधारा से प्रभावित एवं प्रेरित होने के फलस्वरूप शोषित मानव के प्रति गहरी आत्मीयता पीड़ा बोध उनके कथा साहित्य को प्रभावशाली एवं प्रखर बनाता है तो दूसरी ओर अंचल विशेष ठेठ बोली से कथावस्तु भी प्रवाहमयी प्रतीत होती है। इन्हीं सब गुणों को अपने में समेटने वाली कृति है 'अग्निबीज'। जो ग्रामीण जीवन के संघर्ष वैयक्तिक अनुभूतियों एवं कसमसाती संवेदनाओं का एक चिट्ठा है। मार्कण्डेय ने इस कृति के माध्यम से ग्रामीण जीवन संघर्ष की घटनाओं को वाणी देने का प्रयत्न किया है। उपन्यास में देहाती अंचल पहाडत्री अंचल मानव जीवन तथा प्रकृति-परिवेश का बड़ा गहरा संबंध दृष्टिगोचर होता है।

'अग्निबीज' में ग्रामीण चेतना

मार्कण्डेय ने 'अग्निबीज' उपन्यास में पूर्वी उत्तरप्रदेश के बजमा नदी के दोनों छोरों पर बसे रामपुर और सेतपुर गांव के ग्रामीण जीवन के भूभाग को कथा का केंद्र बनाया है। स्वतंत्रता के बाद भी यह गांव अनेक प्रकार की समस्याओं, विसंगतियों एवं अंतर्द्वंद्वो से ग्रस्त है। प्रस्तुत उपन्यास में सन् 1953-54 के आसपास के ग्रामीण संदर्भों को लेकर ठाकुर ज्वालासिंह तथा साधोकाका पात्रों के माध्यम से चित्रित किया है। जमींदारी उन्मूलन के बावजूद ठाकुर ज्वालासिंह गांव में सर्वेसर्वा हैं। अनेक छक्के-पंचों से वे गांव के असहाय लोगों को लूटने, खसोटने का कार्य कर रहे हैं। भय तथा आतंक से भयभीत जनता बिना मुंह खोले उनके अत्याचारों को सहन कर रही है। पूंजीवादी पहलुओं को लेखक 'अग्निबीज' उपन्यास के माध्यम से वास्तविक स्थितियों को उजागर किया है।

लेखक ने उपन्यास के माध्यम से मानवीय संवेदना एवं सहानुभूति के साथ सामाजिक यथार्थ को चित्रित करने का प्रयास किया है। यह यथार्थ चित्रण बदन के रोंगटे खड़े करता है कि क्या यही हमारे गांवों की वास्तविकता है ? ठाकुर ज्वालासिंह समाज में फैला हुआ डर एवं आतंक, सवर्णों के निम्नवर्ग पर किए हुए अत्याचार एवं मिथ्याभिमान, बहु-बेटियों की दर्दनाक स्थिति, फटे-पुराने चीथड़ों में अनावृत लज्जा, पशुओं के गोबर से दाने बीनने की मजबूरी, ब्राह्मण का ब्राह्मण के साथ दुव्र्यवहार पशु से भी बदतर जिंदगी जीने के लिए बाध्य परिस्थितियां आदि इन सब यथार्थ स्थितियों का वर्णन मार्कण्डेय ने अपने उपन्यास में कलात्मक स्तर पर किया है।

ज्वालासिंह आजादी के बाद बदलते हुए राजनीतिक परिवेश में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहे हैं। जमींदारी उन्मूलन-कानून लागू होने के पहले ही बड़ी चालाकी तथा दूरदृष्टि से गांव की जमीन की हेराफेरी करके वे धन-दौलत कमा लेते हैं। ठाकुर ज्वालासिंह स्वार्थी, लालची, शोषक जमींदार हैं, जो अपनी स्वार्थसिद्धि के लिए किसी भी हद तक जाने के लिए तैयार हैं। ज्वालासिंह

अपने विरोधी को निर्ममता से कुलचने की शक्ति रखते हैं। चुनाव में विरोधी सोशलिस्ट पार्टी के धनिकलाल के जुलूस में बाधा पहुंचाकर उसे असफल करने का प्रयास करते हैं। तथा साधो काका को पागल घोषित कर उनके चुनावी टिकट को स्वयं हथियाते हैं। साधो काका के नाम पर जाली अपील निकालकर वे चुनाव जीत जाते हैं। वे बहुत ही स्वार्थी हैं, जिनके पास आपसी रिश्तों का अथवा अपने-पराये का कोई स्थान नहीं हैं साधो काका तथा उनकी पत्नी जरूरत पड़ने पर उनसे अच्छा व्यवहार करते हैं। काम निकलने पर उनकी तरफ वे देखते भी नहीं। पुलिस पर भी ऐसा आतंक छाया है कि वे हिरनी के खूनी को छुड़वा देते हैं। आश्रम में आग लगाने वाले गोविन के परिवार को छुड़वा देते हैं। निर्दोष और ईमानदार मुसई-महंतों को साजिश का शिकार बनाकर गिरफ्तार करवाते हैं। और इतना ही नहीं पुण्य कमाने की इच्छा दर्शाते हुई नयी चेतना जगाने वाली श्यामा को जो उनकी राहों का कांटा बनी हुई है, उसकी शादी कर देते हैं। चिंगारी से आग बनने से पहले ही शाला बुझ जाता है।

'अग्निबीज' उपन्यास में सवर्णों द्वारा किए अत्याचारों की सूची बहुत लंबी है। सागर एवं बैकुंठी पर बजमा की मछली पकड़ने पर किया गया अत्याचार, धोबियों पर कपड़े धोने के लिए टिकट लगवाना, मुसई महंतों को गिरफ्तार करवाना, आश्रम में आग लगवाना आदि कार्य या अत्याचारों का तानाबाना नागार्जुन, शिवप्रसादसिंह, रेणु, मिथिलेश्वर की यथार्थवादी रचनाओं की याद दिलाते हैं।

साधो काका सच्चे गांधीवादी हैं। देश की आजादी के लिए स्वयं अपनी मातृभूमि के लिए समर्पित व्यक्तित्व वाले व्यक्ति हैं। स्वयं अभावों की जिंदगी जीने के लिए लाचार, घर, परिवार, बेटी की चिंता से मुक्त लेकिन पूरे समाज को परिवार की भांति मानकर उनके हक क लिए लड़ने को तैयार। पर यही साधो काका आजादी के बाद अपने विचारों की पूर्ति न होते देखकर मोहभंग का शिकार बनते हैं। उपन्यास में ज्वालासिंह धूर्त, स्वार्थी, अन्यायी, मतलबी इंसान का प्रतीक है, तो वहीं उसका भाई साधो काका ईमानदार, संघर्षशील, मूल्यों को मानने वाले तथा गांव के लिए प्रेरणा स्रोत हैं। पथ प्रदर्शक हैं। इसलिए सुनीत कहता है, "हम वहां से चलेंगे जहां साधो काका ने छोड़ा है। वे विशाल वटवृक्ष की भांति हैं, जिसकी छाया में गांव वाले चैन की सांस लेते हैं। उन्होंने देश की भूमि को मां के रूप में देखा है।'' सुनीत जैसे युवा वर्ग के प्रतिनिधि पर साधो काका के चरित्र का गहरा प्रभाव देखने को मिलता है। वह कहता है कि मैंने उन्हीं से जाना कि देश क्या होता है, मातृभूमि किसे कहते हैं और व्यक्ति का देश से क्या रिश्ता होता है। मेरे जीवन की चेतना का अंकुर जिस भूमि में उगा, वह भूमि काका की है। ''वह मेरे लिए आंखों से ओझल नहीं हुए। वे मेरे लिए नहीं, इस पूरे क्षेत्र के लिए एक तीर्थ के समान है।"2

उपन्यास में युवा नेता श्यामा स्वतंत्रता सेनानी, देशभक्त साधो काका की लड़की है। उम्र में छोटी होने के बावजूद उसके पास एक जीवन दृष्टि है, जिसके आधार पर सुनीत, मुराद सागर ये सभी अनंत दीपों की चार बातियों की तरह खड़े हैं। सुनीत उसके चाचा का लड़का पिता ज्वालासिंह का विरोधी है। वह मानवतावादी दृष्टि के सहारे चलता है। वह अत्यंत भावुक और संवेदनशील है। सुनीत अपने पिता की कूटनीति, अत्याचार को समझ जाता है, जिससे उसका हृदय टूट जाता है। उसके प्रति अपराधबोध उत्पन्न हो जाता है। श्यामा सब कुछ जानते हुए ज्वालासिंह के

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 फरवरी 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

अत्याचारों को सहन करते हुए भी सुनीत से वास्तविकता छिपाना चाहती है। लेकिन सुनीत यथार्थ स्थितियों को समझ जाता है। तब वह श्यामा से कहता है, "इस तरह तू मुझे कब तक बहलाएगी श्यामा ? इससे मेरा क्या लाभ होगा बहिन ? तू मुझे क्या बनाना चाहती है ? क्या सारी जिंदगी मैं ऐसा ही रहूंगा ? श्यामा उत्तर में उसे अपना रास्ता तय करने के लिए कहती है।"3 जिसे लेखक ने प्रतिनिधि पात्र के रूप में हमारे सामने रचा है।

मुराद हथकरघा कारीगर बाकर का बेटा है। वह गांव में फैले घने अंधकार को मिटाने के लिए हमेशा संघर्षरत है। लेकिन बिना सत्य और न्याय के पथ को त्याग हुए व्यवस्था को लेकर तमात प्रश्नचिह्न उसके दिमाग में उपजते हैं। भूख और गरीबी, असमान आर्थिक व्यवस्था, प्रगतिशील विचारों की सोच से वह समाज में बुनियादी परिवर्तन की आकांक्षा रचना वह मानता है। आज के समाज की बुराइयों की जड़ शोषण प्रणाली है। नारी को लेकर भी अनेक विचारों का बवंडर उसके दिमाग में उत्पन्न होता है। और वह इस नतीजे पर पहुंचता है कि नारी को अपने आत्मसम्मान की रक्षा के लिए खुद के पैरों पर खड़ा होना चाहिए।

सागर श्यामा द्वारा दिए हुए जीवन को विफल नहीं करना चाहता। और वह बनाने के लिए हमेशा संघर्ष करता रहता है। सागर में निडरता और स्पष्टवादिता है। वह श्यामा से अलग अपने अस्तित्व को स्वीकार नहीं करना चाहता। उसका आत्मकथन है, "श्यामा दीदी के अलावा मेरी खुद से कोई पहचान नहीं है। सभी को पता है कि मुझे मामूली कीड़े-मकोड़े से भी गया-बीता जीवन मिला है। धूल में सना हुा पददलित नीच उपेक्षित कुत्ते से भी बदतर हर जगह से दुरदुराया हुआ और अपमानित। इतने पर भी मैं जीवित हूं तो मात्र श्यामा दीदी के कारण। मां ने तो सिर्फ जन्म दिया था, मुराद, श्यामा ने मुझे जीवन दिया।"4

आश्रम के स्कूल से हरिजन के बच्चे गोविंद महाराज के कहने पर छोड़ता नहीं, बल्कि उसको खरीखोटी सुनाता है। तथा भाई से भी निडरतापूर्वक कहता है कि वह नकली जीवन को जीना नहीं चाहता। अपनी कर्तव्यपरायणता के कारण वह आश्रम में लगी आग बुझाने में अपने जीवन को खतरे में डालता है। इस प्रकार ये जिंदगी में आए हुए खतरों से टक्कर लेकर जीने की तमन्ना रखते हैं। इन सब में सुनीत का चरित्र निरंतर संघर्षशील है। सुनीत ही आंतरिक और बाह्य संघर्ष से निरंतर जूझता रहता है।

सुनीत संपन्न परिस्थिति होने के बावजूद वह मुस्लिम मुराद और हरिजन सागर से घनिष्ठ संबंध रखने में हिचकिचाहट महसूस नहीं करता। इतना ही नहीं बल्कि उसे अपने थर्मस से दूध प्याली में खुलकर देने में श्यामा थोड़ा संकोच महसूस करता है। वहां सुनीत जरा भी हिचकिचाता नहीं है। साधुकाका की राह पर चलकर वह अपनी पहचान बनाना चाहता है। श्यामा उपन्यास में अनेक रूपों में हमारे सामने आते हैं। जैसे स्वर्ग की कोई देवी धरती पर उतर आयी है।"6 किसी निविड अंधकार में जलते हुए एकांत दीप की तरह।"7 जैसे कोई सोने की सजीव मूर्ति पश्चिम के लाल आसमान की ओर बढ़ती चली आ रही है।"8 तीनों को जीवन की उर्जस्विता प्रदान करने हेतु वह स्वयं दीपशिखा सी जलती रहती है। सबके संघर्ष की दिशा तय करने में सहायक होती है। नारी के अभिशप्त जीवन तथा अन्याय के विरुद्ध वह बोलने की

क्षमता रखती है। यथार्थ से साक्षात्कार करके स्वप्न लोक से भूमि पर वास करने के लिए दृष्टि प्रदान करती है। बचपन से परिस्थितियों के थपेड़े सहते उसने अपनी प्रगतिकामी विचारधारा कायम की है।

बंगाल के युवा आलोचक और कलम पत्रिका के संपादक अरुष माहेश्वरी के शब्दों में परिस्थितियों के थपेड़ों ने उसे बहुत छोटी-सी उम्र में ही बड़े-बूढ़ों की तरह परिपक्व बना दिया है और गूंगे बापके समझौताहीन संघर्ष की प्रेरणा देने वाले अतीत और वर्तमान ने उसे झूठ-फरेब, शोषण और जुल्म के प्रति सहज, मानवीय घृणा तथा संतोषी मनोवृत्ति के प्रति रिक्ततापूर्ण विक्षोभ दिया है।"9 लेकिन संघर्षशील गरीबी की उनके शोषण से मुक्त कराने के लिए हमेशा कर्मरत, अपना विचार दृष्टि से राजनीतिक धरातल पर हलचल उत्पन्न करने वाली यह श्यामा परिस्थितिवश होकर शादी के लिए स्वीकृति देती है। इस प्रकार श्यामा परिस्थितियां एवं समाज की मान्यताओं के घेरे से पूर्णतः मुक्त नहीं होती। परंपरानुसार चले आये रीतिरिवाजों के घेरे में वह आबद्ध है। फिर भी वह समाज को बदलने के अभिलाषी युवकों के लिए पथ प्रदर्शिका विविधान्मुखी चारित्रिक बहुआयामी तेवरों से युक्त है। उसमें सरलता, सौम्य, गंभीरता का केंद्र है। परिवर्तन की भावी संभावनाओं का जीवंत प्रतीक है। नयी चेतना की वह सर्वाधिक सशक्त चिंगारी है। प्रत्येक घटना के साथ उसका चरित्र निखरता जाता है। और अंत तक आते-आते वह एक लिजेंड का रूप लेकर अपने व्यक्तित्व की सर्वथा एक अलग पहचान बनाती है।

निष्कर्ष

हिन्दी साहित्य में कथा साहित्य की एक लम्बी एवं सशक्त परंपरा है। लगभग एक सौ वर्षों से सामाजिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, आंचलिक, महानगरीय कथा सूचनाएं साहित्य में उपलब्ध हैं, जिसकी सशक्त परंपरा प्रेमचंद के बाद नागार्जुन, फणीश्वरनाथ रेणु, उदयशंकर भट्ट, शिवप्रसाद सिंह, शैलेष मटियानी, शिवमूर्ति और मैत्रेयी पुष्पा के साथ-साथ मार्कण्डेय आदि ने निर्मित की है। आंचलिक कथा साहित्य में मार्कण्डेय की पहचान लोकजीवन, लोकसंस्कृति के संदर्भ में रेखांकित होती है। मार्कण्डेय के उपन्यास सेमल के फूल और अग्निबीज ग्रामीण यथार्थवादी धारणाओं को पेश करते हैं। वास्तव में मार्कण्डेय के अग्निबीज उपन्यास में अंचल नहीं बल्कि ग्रामीण जनजीवन का जीता-जागता मनुष्य अपनी पूरी अहमियत और इसे नेस्तनाबूत कर देने वाली ताकतों के आमने-सामने खड़ा रहता है। मार्कण्डेय ने अपने कथा साहित्य में मिर्जापुर, इलाहबाद, गोरखपुर, बलिया और कानपुर आदि जीवन को भिन्न पात्रों और परिवेश के माध्यम से आम पाठकों को परिचित कराते हैं। अग्निबीज उपन्यास में उत्तरप्रदेश के ग्रामीण परिदृश्य को रेखांकित किया गया है।

संदर्भ ग्रंथ

1 हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ.नगेंद्र, पृष्ठ 427

2 अग्निबीज, मार्कण्डेय, नया साहित्य प्रकाशन, इलाहबाद, पृष्ठ 56

3 वही, पृष्ठ 58

4 वही, पृष्ठ 205-206

5 वही, पृष्ठ 236

6 वही, पृष्ठ 124

7 वही, पृष्ठ 204

8 नया पथ, पत्रिका, संपादक अरुण माहेश्वरी, अक्टूबर-दिसम्बर 1986, पृष्ठ 48

9 मार्कण्डेय का रचना संसार, सुरेंद्र प्रसाद, पृष्ठ 61